

# एलियाह - नंबर दस

Jeff Pippenger

2023-10-13

१८५६

मिलराइट आंदोलन का प्रतिनिधित्व यशायाह अध्याय सात में एक पैंसठ-वर्षीय भविष्यवाणी द्वारा किया गया था, जो 742 ईसा पूर्व में आरंभ हुई। यशायाह के इतिहास में घटित वे पैंसठ वर्ष 1798 से 1863 तक के पैंसठ वर्षों का प्रतिनिधित्व करते हैं। अल्फा और ओमेगा सदैव आरंभ के साथ अंत को चित्रित करेंगे। यह पैंसठ-वर्षीय भविष्यवाणी इस्राएल के उत्तरी और दक्षिणी राज्यों के विरुद्ध सात गुना के शाप की पहचान कराती है। उत्तरी राज्य के विरुद्ध पहला सात गुना 723 ईसा पूर्व में आरंभ हुआ, जब यशायाह ने राजा आहाज के समक्ष यह भविष्यवाणी प्रस्तुत करने के उन्नीस वर्ष बाद। दक्षिणी राज्य के विरुद्ध अंतिम सात गुना 677 ईसा पूर्व में, उन पैंसठ वर्षों के अंत में, आरंभ हुआ।

इफ्रैम के विरुद्ध सात गुणा का पहला श्राप 1798 में समाप्त हुआ, जो अंत का समय था, जब दानियेल के अध्याय आठ और नौ में उलाई नदी के दर्शन की मुहर खोली गई। इसने भविष्यसूचक रूप से प्रथम स्वर्गदूत के संदेश के आगमन तथा मिलराइट आंदोलन की शुरुआत—दोनों को चिह्नित किया। यहूदा के विरुद्ध सात गुणा का अंतिम श्राप 1844 में समाप्त हुआ, जो तीसरे स्वर्गदूत के संदेश का आगमन था। उन्नीस वर्ष बाद, 1863 में, भविष्यवाणी के आरंभ में जिन पैंसठ वर्षों का संकेत था, उन्होंने मिलराइट आंदोलन के अंत और लाओदिकियाई सातवें-दिन एडवेंटिस्ट कलीसिया की शुरुआत को चिह्नित किया। 1863 से सात वर्ष पहले, 1856 में, जेम्स वाइट ने यह पहचानना शुरू किया कि मिलराइट आंदोलन अब फिलाडेल्फिया की कलीसिया नहीं रहा था और वह लाओदिकिया की कलीसिया बन गया था। उनके पौत्र ने, एलेन वाइट की जीवनी लिखते समय, 1856 के इतिहास और लाओदिकियाई संदेश के बारे में लिखा।

## लाओदिकिया का संदेश

सब्त-पालन करने वाले एडवेंटिस्टों ने यह मत अपनाया था कि प्रकाशितवाक्य 2 और 3 में सात कलीसियाओं के लिए दिए गए संदेश सदियों के दौरान ईसाई कलीसिया के अनुभव का चित्रण करते हैं। उनका निष्कर्ष यह था कि लाओदिकिया की कलीसिया के लिए जो संदेश है, वह उन लोगों पर लागू होता है जिन्हें वे अब 'नाममात्र के एडवेंटिस्ट' कहते थे—जो सातवें दिन के सब्त को स्वीकार नहीं करते थे। 9 अक्टूबर के रिव्यू में एक संक्षिप्त संपादकीय में, जेम्स वाइट ने कुछ विचारोत्तेजक प्रश्न उठाए, जिन्हें उन्होंने यह कहते हुए प्रस्तुत किया:

यह प्रश्न फिर से उठने लगा है, 'पहरेदार, रात का क्या हाल है?' फिलहाल केवल कुछ प्रश्नों के लिए ही स्थान है, जो उस विषय की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए पूछे गए हैं, जिससे वे संबंधित हैं। हमें विश्वास है कि शीघ्र ही इसका पूर्ण उत्तर दिया जाएगा। -Review and Herald, 9 अक्टूबर, 1856

उसने जो ग्यारह प्रश्न पूछे, उनमें छठा प्रश्न लाओदीकावासियों पर केंद्रित था।

6. क्या लाओदीकियों की अवस्था (गुनगुनी, न ठंडी न गरम) उन लोगों के समुदाय की स्थिति का समुचित चित्रण नहीं करती जो तीसरे स्वर्गदूत के संदेश को मानते हैं? -Ibid.

अंतिम प्रश्न मामले को खुला कर देता है:

11. यदि एक प्रजा के रूप में हमारी यही दशा है, तो क्या सच्चे साक्षी के 'परामर्श' पर ध्यान दिए बिना हमें परमेश्वर की कृपा की आशा रखने का कोई वास्तविक आधार है? मैं तुझे सम्मति देता हूँ कि तू मुझ से आग में तपा हुआ सोना मोल ले, कि तू धनी हो जाए; और श्वेत वस्त्र, कि तू पहिने, और तेरी नग्नता की लज्जा प्रगट न

हो; और अपनी आँखों में लगाने की दवा ले, कि तू देखने लगे। जिनसे मैं प्रेम करता हूँ, उन्हें मैं ताड़ना देता और शिक्षा देता हूँ; इसलिए उत्साही बन, और मन फिरा। देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ; यदि कोई मेरी आवाज़ सुनकर द्वार खोले, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूँगा, और वह मेरे साथ। जो जय पाएगा, उसे मैं अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठने दूँगा, जैसा कि मैं भी जय पाकर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया हूँ। प्रकाशितवाक्य 3:18-21.-उसी में।

यह स्पष्ट है कि इस विषय का सत्य जेम्स व्हाइट के मन में अभी-अभी उदित हो रहा था। रिव्यू के अगले अंक में उसी शीर्षक के अंतर्गत सात कलीसियाओं की सात स्तंभों में प्रस्तुति प्रकाशित हुई। अपनी प्रारंभिक टिप्पणियों में उन्होंने घोषित किया:

हमें कुछ आधुनिक व्याख्याकारों से सहमत होना चाहिए कि इन सात कलीसियाओं को समय के सात कालों में मसीही कलीसिया की सात अवस्थाओं का प्रतिनिधित्व करनेवाली, और समूचे मसीही युग को आच्छादित करनेवाली, समझा जाना चाहिए। — Ibid., 16 अक्टूबर, 1856.

तब उसने भविष्यवाणी का विषय उठाया और प्रत्येक कलीसिया पर अलग-अलग चर्चा की। सातवीं, लाओदीकिया की कलीसिया, पर पहुँचकर उसने घोषित किया:

इस कलीसिया का यह दुःखद वर्णन हमारे लिए, एक प्रजा के रूप में, कितना नम्र करने वाला है! और क्या यह भयावह वर्णन हमारी वर्तमान स्थिति का सर्वथा सटीक चित्र नहीं है? हाँ, है; और लाओदीकिया की कलीसिया के प्रति इस भेदक गवाही के प्रभाव से बचने की चेष्टा करना व्यर्थ होगा। प्रभु हमारी सहायता करे कि हम इसे ग्रहण करें और इससे लाभ उठाएँ। — वही।

लाओदीकिया की कलीसिया पर दो कॉलम लिखने के बाद, उनकी समापन टिप्पणियों ने एक सशक्त आह्वान किया:

प्रिय भाइयों, हमें संसार, देह और शैतान पर विजय पाना आवश्यक है, नहीं तो परमेश्वर के राज्य में हमारा कोई भाग न होगा. . . . इस कार्य को तुरंत हाथ में लें, और विश्वास से उन कृपालु प्रतिज्ञाओं का दावा करें जो पश्चातापी लाओदीकियों को दी गई हैं। प्रभु के नाम में उठ खड़े होओ, और अपनी ज्योति को उसके धन्य नाम की महिमा के लिए चमकने दो.-वही।

मैदान से मिली प्रतिक्रिया बेहद उत्साहजनक थी। ओहायो से जी. डब्ल्यू. होल्ट ने 20 अक्टूबर को लिखा:

हाँ, मेरा मानना है कि हम, जो परमेश्वर की आज्ञाओं और यीशु के विश्वास के साथ तीसरे संदेश में हैं, वही कलीसिया हैं जिसे यह भाषा संबोधित है; और परखा हुआ सोना, श्वेत वस्त्र, और नेत्र-लेप पाने में, ताकि हम देख सकें, हमें ज़रा भी देर नहीं करनी चाहिए.—वही, 6 नवम्बर, 1856.

ईशान्य से इस विषय पर एक नई आवाज़ सुनाई दी—मैसाचुसेट्स के प्रिंसटन के स्टीफन एन. हैस्केल की। प्रथम-दिवसीय एडवेंटिस्ट के रूप में उन्होंने 20 वर्ष की आयु में उपदेश देना शुरू कर दिया था; अब तीन वर्ष बाद वे तीसरे स्वर्गदूत के संदेश में थे। बाइबल के एक गहन विद्यार्थी के रूप में, सात कलीसियाओं के प्रश्न का परिचय देती व्हाइट की संक्षिप्त प्रारंभिक संपादकीय देखकर, उन्होंने रिव्यू के लिए एक विस्तृत लेख लिखने का निश्चय किया:

जिस विषय का उल्लेख किया गया है, वह पिछले कुछ महीनों से मेरे लिए गहरी रुचि का विषय रहा है। ... कुछ समय से मुझे यह विश्वास होने लगा है कि लाओदीकियों के लिए जो संदेश है, वह हम पर लागू होता है; अर्थात्, तीसरे स्वर्गदूत के संदेश पर विश्वास करने वालों पर—ऐसे अनेक कारणों से जिन्हें मैं उचित मानता हूँ। मैं उनमें से दो का उल्लेख करूँगा।—वही.

वह ऐसा करता है, अपने निष्कर्षों के लिए दो स्तंभ समर्पित करते हुए। समापन करते हुए उसने कहा:

विवाह के वस्त्र के बिना, जो पवित्र जनों की धार्मिकता है, तीसरे स्वर्गदूत के संदेश का एक सिद्धान्त हमें कभी नहीं, हरगिज़ नहीं, उद्धार देगा। हमें प्रभु के भय में पवित्रता को परिपूर्ण करना चाहिए।- वही

जैसे-जैसे जेम्स व्हाइट लाओदिकिया की कलीसिया के लिए संदेश पर अपने संपादकीय जारी रखते गए, रिव्यू में अब सब्त-पालक एडवेंटिस्ट जो विचार पढ़ रहे थे, वे चौंकाने वाले थे; परंतु विवेकपूर्ण और प्रार्थनापूर्वक विचार करने पर वे लागू प्रतीत हुए। संपादक को लिखे पत्रों में काफ़ी व्यापक सहमति दिखाई दी और उन्होंने संकेत दिया कि एक आध्यात्मिक जागृति चल रही थी। यह कि वह झकझोर देने वाला संदेश मात्र उत्तेजना का परिणाम नहीं था, इसकी पुष्टि अप्रैल 1857 में प्रकाशित टेस्टिमोनी संख्या 3 के प्रथम लेख "उत्साही बनो और मन फिराओ" ने की। इसका आरंभ इस प्रकार होता है, "प्रभु ने मुझे दर्शन में कलीसिया की वर्तमान गुनगुनी अवस्था के संबंध में कुछ बातें दिखाई हैं, जिन्हें मैं आपको बताऊँगी।" —1T, पृ. 141। इसमें एलेन व्हाइट ने, जैसा उन्हें दिखाया गया, यह प्रस्तुत किया कि शैतान किस प्रकार सांसारिक समृद्धि और संपत्तियों के माध्यम से कलीसिया पर आक्रमण करता है। आर्थर व्हाइट, Ellen G. White: The Early Years, खंड 1, 342-344।

मिलराइट आंदोलन भविष्यसूचक रूप में फिलाडेल्फिया की कलीसिया के रूप में आरंभ हुआ, और 1856 में वह लाओदीकिया की कलीसिया बन गया। सात वर्ष बाद वह आंदोलन समाप्त हो गया, और सातवें दिन की एडवेंटिस्ट कलीसिया लाओदीकिया की कलीसिया के रूप में आरंभ हुई और ऐसी ही बनी रहेगी, जब तक कि उसे प्रभु के मुँह से उगल न दिया जाए। एक लाख चवालीस हज़ार का आंदोलन लाओदीकिया की कलीसिया की भेड़शाला से निकला, जैसे मिलराइट आंदोलन सार्दिस की कलीसिया की भेड़शाला से निकला था। एक लाख चवालीस हज़ार का यह आंदोलन मिलराइट आंदोलन के समानांतर है, इस अर्थ में कि पहला आंदोलन फिलाडेल्फिया से लाओदीकिया में बदल गया और अंतिम आंदोलन लाओदीकिया से फिलाडेल्फिया में बदलता है। मिलराइट इतिहास में फिलाडेल्फिया से लाओदीकिया में संक्रमण का बिंदु विशेष रूप से 1856 के रूप में चिह्नित है, इसलिए अंतिम आंदोलन में भी संक्रमण-बिंदु चिह्नित होना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर कभी नहीं बदलता। इस संक्रमण-बिंदु की पहचान प्रकाशितवाक्य 11 में उन दो भविष्यद्वक्ताओं के साथ की गई है, जिन्हें सड़कों पर मार डाला जाता है।

और जब वे अपनी गवाही पूरी कर चुके होंगे, तब वह पशु जो अथाह कुंड से ऊपर निकलता है, उनसे लड़ाई करेगा, और उन पर जय पाएगा, और उन्हें मार डालेगा। और उनके शव उस बड़े नगर की सड़क पर पड़े रहेंगे, जो आत्मिक रीति से सदोम और मिस्र कहलाता है, जहाँ हमारे प्रभु को भी क्रूस पर चढ़ाया गया था। प्रकाशितवाक्य 11:7, 8.

अंतिम आंदोलन मर जाएगा, फिर उठ खड़ा होगा और उसके बाद ध्वज के रूप में पुनर्जीवित होगा। ऐसा करते हुए वह रिपब्लिकन सींग के साथ संरेखित हो जाएगा। रिपब्लिकन सींग पशु की एक छवि बनाता है, और जिस पशु की वह छवि बनाता है उसका उल्लेख प्रकाशितवाक्य सत्रह में है, और उस पशु की पहचान उस पाँचवें सिर के रूप में की गई है जिसे घातक घाव लगा था, जो आठवें सिर के रूप में पुनर्जीवित होगा। वह आठवाँ होकर पुनर्जीवित होगा, जो सात में से था।

और वह पशु जो था, और नहीं है, वही आठवाँ है, और सातों में से है, और विनाश में जाता है। प्रकाशितवाक्य 17:11.

रिपब्लिकन सींग उस पशु की मूर्ति बनाएगा, और इसलिए वह मार दिया जाएगा और फिर पुनर्जीवित किया जाएगा। जब वह पुनर्जीवित होगा, तो वह आठवाँ सिर होगा, जो पिछले सात सिरों में से है। प्रोटेस्टेंट सींग उसी पृथ्वी के पशु पर सवार है जिस पर रिपब्लिकन सींग सवार है, और उसे वही भविष्यसूचक गतिशीलताएँ धारण करनी होंगी। मिलेराइट आंदोलन में फिलाडेल्फिया से लाओदिकिया की ओर का संक्रमण, अंतिम आंदोलन में लाओदिकिया से फिलाडेल्फिया की ओर होने वाले संक्रमण का पूर्वचित्रण करता है।

18 जुलाई, 2020 को जब अंतिम आंदोलन को घातक घाव लगा, तब वह लाओदीकिया के रूप में मर गया। जब, जैसा कि प्रकाशितवाक्य ग्यारह में दर्शाया गया है, वह फिलाडेल्फिया में रूपांतरित हुआ, तो वह आठवीं कलीसिया

का प्रतिनिधित्व करेगा, जो सातों में से है। साल 2020 में हुई उस मृत्यु का समांतर रिपब्लिकन सींग में दिखाई दिया, क्योंकि 1989 में अंत का समय शुरू होने के बाद से छह राष्ट्रपति हो चुके थे। छठे राष्ट्रपति को घातक घाव लगा, जो 2024 में चंगा हो जाएगा। तब वह सिर 1989 में अंत का समय शुरू होने के बाद से संयुक्त राज्य का आठवाँ सिर होगा, और वह सातों में से होगा। दोनों सींगों में छठा ही आठवाँ बनता है। यह सत्य यीशु मसीह के प्रकाशितवाक्य के संदेश का एक बड़ा हिस्सा है, जिसकी मुहर अनुग्रहकाल के समापन से ठीक पहले खुलती है।

इसी कारण, उस मिलेराइट इतिहास के विषय में स्पष्ट होना महत्वपूर्ण है जो हमारे वर्तमान इतिहास का प्रतिरूप है। सिस्टर व्हाइट ने 1856 में आंदोलन पर लाओदिकिया को लागू करने की जेम्स व्हाइट की बात की पुष्टि की; अतः यह कोई ऐसा अनुप्रयोग नहीं है जो मानव तर्क से निकाला गया हो। सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया के रिपब्लिकन हॉर्न से कानूनी रूप से जुड़ने से सात वर्ष पहले ही, उसे प्रेरणा द्वारा लाओदिकिया की कलीसिया के रूप में पहचाना गया था। इसका अर्थ है कि सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया के इतिहास में एक भी दिन ऐसा नहीं रहा जब वह नग्न, गरीब, अंधी, दयनीय और दीन-हीन के सिवा कुछ और रही हो। यह भविष्यसूचक वास्तविकता, यहजेकेल अध्याय आठ की क्रमशः बढ़ती चार घृणित बातों को एडवेंटिज़्म की चार पीढ़ियों के रूप में पहचानने के लिए संदर्भ और औचित्य प्रदान करती है।

जब मिलेराइट इतिहास को यशायाह अध्याय सात के पैसठ वर्षों की संरचना के परिप्रेक्ष्य से देखा जाता है, तो यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि 'सात समय' की भविष्यवाणी वह भविष्यसूचक छत्रछाया है जो मिलेराइट आंदोलन के समूचे इतिहास पर फैली हुई है। 1856 में, लाओदिकिया की कलीसिया को दिया गया संदेश मिलेराइट एडवेंटवाद के लिए वर्तमान सत्य बन गया। लाओदिकिया का संदेश प्रस्तुत करने वाला जेम्स या एलेन वाइट नहीं था; वह विश्वासयोग्य और सच्चा साक्षी था।

और लाओदिकियों की कलीसिया के दूत को लिख; ये बातें कहता है आमीन, वह विश्वासयोग्य और सच्चा साक्षी, परमेश्वर की सृष्टि का आरम्भ; मैं तेरे कामों को जानता हूँ, कि तू न तो ठंडा है और न गर्म: काश तू ठंडा या गर्म होता। सो क्योंकि तू गुनगुना है, और न ठंडा है न गर्म, इसलिए मैं तुझे अपने मुँह से उगल दूँगा। क्योंकि तू कहता है, मैं धनी हूँ, धन-सम्पत्ति से भर गया हूँ, और मुझे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं; और तू नहीं जानता कि तू दुखी, दयनीय, गरीब, अंधा और नंगा है: मैं तुझे सम्मति देता हूँ कि तू मुझसे आग में तपा हुआ सोना खरीद ले, ताकि तू धनी हो जाए; और श्वेत वस्त्र भी कि तू पहन ले, और तेरी नग्नता की लज्जा प्रकट न हो; और अपनी आँखों में लगाने के लिए आँखों की दवा ले, ताकि तू देख सके। जिनसे मैं प्रेम करता हूँ, उन्हें मैं ताड़ना देता और अनुशासित करता हूँ: इसलिए उत्साही बन, और पश्चाताप कर। देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ: यदि कोई मेरी आवाज़ सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके भीतर आकर उसके साथ भोजन करूँगा, और वह मेरे साथ। जो जय पाएगा, उसे मैं यह अधिकार दूँगा कि वह मेरे साथ मेरे सिंहासन पर बैठे, जैसा कि मैं भी जय पाकर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया हूँ। जिसके कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है। प्रकाशितवाक्य 3:14-22.

सच्चा साक्षी यह बताता है कि यदि कोई मनुष्य उसकी आवाज़ "सुने", तो वह भीतर आकर "उसके साथ भोजन करेगा"। यदि लाओदिकिया द्वार खोल दे, तो मसीह भीतर आकर उनके साथ भोजन करेगा। यदि मसीह को प्रवेश करने दिया जाए, तो वह एक संदेश लाता है, क्योंकि भोजन का प्रतीकवाद संदेश को ग्रहण करने का प्रतिनिधित्व करता है। उस संदेश को सामान्य रूप से केवल लाओदिकिया का संदेश कहा जा सकता है, पर यह उसके द्वारा प्रस्तुत संदेश के अर्थ का सतही आकलन है। 1856 में, हाइरम एडसन ने आठ लेखों की एक श्रृंखला प्रस्तुत की, जिनमें वह भविष्यवाणी-संबंधी जानकारी थी जो उस पहली "समय-भविष्यवाणी" की समझ का विस्तार करती है, जिसे परमेश्वर के स्वर्गदूतों ने विलियम मिलर को पहचानने और घोषित करने के लिए मार्गदर्शन किया था। उन आठ लेखों में, एडसन ने यशायाह अध्याय सात के पैसठ वर्षों की सही पहचान की।

विलियम मिलर के कार्य का प्रारम्भ 'सात समय' की खोज से हुआ, और उसकी सेवा के नाम पर कहलाने वाले आंदोलन के समाप्त होने से सात वर्ष पहले, उसी भविष्यवाणी का एक और गहरा प्रकाशन मिलेराइट एडवेंटवाद को

प्रस्तुत किया गया। यह उसी वर्ष प्रस्तुत किया गया जब प्रेरणा द्वारा उन्हें लाओदिकियाई के रूप में पहचाना गया। भविष्यसूचक गणना के अनुसार पच्चीस सौ बीस दिन बाद, 1863 में, मिलर की भविष्यवाणी-संबंधी समय की पहली खोज को अस्वीकार कर दिया गया। एडवेंट आंदोलन के लिए लाओदिकियाई संदेश 1856 में आया, और प्रभु ने यह देखने के लिए कि क्या वह प्रवेश पा सके, आठ लेखों के माध्यम से दरवाज़े पर आठ बार दस्तक दी। आंदोलन के अंत में, सच्चे साक्षी ने अपनी प्रजा के साथ मिलकर भोजन करना चाहा, और उस भोजन के रूप में आंदोलन की शुरुआत से समय-संबंधी उसी प्रथम संदेश को रखा। परन्तु उसकी प्रजा ने खाने से इनकार कर दिया, और सात वर्ष, अर्थात् भविष्यवाणी के पच्चीस सौ बीस दिनों के बाद, उसकी प्रजा ने उस द्वार को बंद कर दिया जिसे दाऊद की कुंजी से खोला गया था, जो विलियम मिलर के हाथ में रखी गई थी। वे एक पुराने सामरी नबी के पास लौट गए, जिसने उन्हें झूठ खिलाया और उनकी नियति पर यह मुहर लगा दी कि वे एक गधे और एक सिंह के बीच मरें।

1856 में, प्रोटेस्टेंट सींग दर्शन की घाटी के संकट में था, क्योंकि जहाँ दर्शन नहीं होता, वहाँ लोग नष्ट हो जाते हैं। 1856 में, रिपब्लिकन सींग भी एक संकट में था।

वर्ष 1856 ने 'ब्लिडिंग कैनसस', यानी कैनसस-मिसौरी सीमा युद्ध, के नाम से ज्ञात हिंसक संघर्ष की निरंतरता को चिह्नित किया। यह संघर्ष इस बात पर था कि कैनसस संघ में एक मुक्त राज्य के रूप में शामिल होगा या दास-प्रथा वाले राज्य के रूप में। इस संघर्ष में दास-प्रथा समर्थक और दास-प्रथा विरोधी बसने वालों के बीच हिंसक झड़पें शामिल थीं।

22 मई 1856 को संयुक्त राज्य सीनेट कक्ष में एक हिंसक घटना भी हुई, जब दक्षिण कैरोलाइना के दासता-समर्थक प्रतिनिधि सभा के सदस्य प्रेस्टन ब्रूक्स ने मैसाचुसेट्स के सीनेटर चार्ल्स समनर पर अपनी छड़ी से बेरहमी से हमला किया। समनर ने 'कैनसस के विरुद्ध अपराध' शीर्षक से एक दासता-विरोधी भाषण दिया था, जिसने ब्रूक्स को गहराई से आहत किया। इस छड़ी से पिटाई की घटना ने दासता के मुद्दे पर उत्तर और दक्षिण के बीच बढ़ते तनाव को उजागर किया।

1856 में रिपब्लिकन पार्टी की स्थापना 1854 में पारित कंसास-नेब्रास्का अधिनियम से उत्पन्न राजनीतिक उथल-पुथल के प्रत्युत्तर में हुई, जिसने नए क्षेत्रों में दासप्रथा के विस्तार के विरुद्ध बढ़ते विरोध को जन्म दिया। पार्टी का पहला राष्ट्रीय अधिवेशन फिलाडेल्फिया में आयोजित हुआ, और 1856 के चुनाव में जॉन सी. फ्रेमॉन्ट को उसका पहला राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार चुना गया।

कैनसस-नेब्रास्का अधिनियम ने कैनसस और नेब्रास्का के क्षेत्रों का संगठन किया और उन क्षेत्रों के बसनेवालों को यह तय करने की अनुमति दी कि वे अपनी सीमाओं के भीतर दासता की अनुमति देंगे या नहीं। इस अवधारणा, जिसे "लोक-प्रभुसत्ता" कहा जाता है, ने व्यवहारतः 1820 के मिसौरी समझौते को निरस्त कर दिया, जिसने लुइज़ियाना क्षेत्र में 36°30' अक्षांश रेखा के उत्तर में दासता पर प्रतिबंध लगाया था। इस अधिनियम का क्षेत्रों में दासता के मुद्दे पर गहरा प्रभाव पड़ा। इसने क्षेत्रीय तनावों को फिर से भड़का दिया क्योंकि इससे यह संभावना खुल गई कि दासता उन क्षेत्रों तक फैल सकती है जिन्हें पहले "मुक्त भूमि" माना जाता था, जैसे कैनसस। कैनसस-नेब्रास्का अधिनियम के पारित होने से दासता-समर्थक और दासता-विरोधी बसनेवालों की भीड़ कैनसस क्षेत्र की ओर उमड़ पड़ी; दोनों ही "लोक-प्रभुसत्ता" के मतदान के परिणाम को प्रभावित करने की उम्मीद कर रहे थे। क्षेत्र पर नियंत्रण की इस प्रतिस्पर्धा ने हिंसक टकरावों और अराजकता की एक अवधि को जन्म दिया, जिसे 1856 में "ब्लिडिंग कैनसस" के नाम से जाना गया।

1856 का राष्ट्रपति चुनाव एक महत्वपूर्ण राजनीतिक घटना थी। इसमें डेमोक्रेट जेम्स बुकानन, रिपब्लिकन जॉन सी. फ्रीमॉन्ट, और अमेरिकन पार्टी की ओर से पूर्व राष्ट्रपति मिलाई फिलमोर के बीच त्रिकोणीय मुकाबला हुआ। जेम्स बुकानन ने चुनाव जीता और संयुक्त राज्य अमेरिका के 15वें राष्ट्रपति बने।

जेम्स बुकैनन का राष्ट्रपति कार्यकाल मुख्यतः उत्तर और दक्षिण के बीच बढ़ते तनाव और विभाजनों को प्रभावी ढंग से संबोधित करने में विफल रहने के लिए जाना जाता है, जिसका परिणाम यह हुआ कि उनके पद छोड़ने के तुरंत बाद अमेरिकी गृहयुद्ध छिड़ गया। नेतृत्व और संकट प्रबंधन में हुई इन गंभीर विफलताओं के कारण, उनके राष्ट्रपति कार्यकाल को अक्सर अमेरिकी इतिहास के सबसे कम सफल कार्यकालों में से एक माना जाता है।

1857 में दिया गया कुख्यात ड्रेड स्कॉट निर्णय ने घोषित किया कि दास, चाहे दासता में हों या मुक्त, नागरिक नहीं थे और संघीय अदालतों में मुकदमा नहीं कर सकते थे। इसने यह भी घोषित किया कि कांग्रेस संयुक्त राज्य अमेरिका के क्षेत्रों में दासता को रोक नहीं सकती थी। डेमोक्रेट बुकेनन ने सार्वजनिक रूप से दासता-समर्थक ड्रेड स्कॉट निर्णय का समर्थन किया।

डेमोक्रेटिक पार्टी के बुकेनन के गुलामी-समर्थक रुख ने न केवल तनाव को बढ़कर गृहयुद्ध में बदलने दिया, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था को संभालने में उनकी अक्षमता ने 1857 के आर्थिक संकट को जन्म दिया, जो महामंदी से पहले अमेरिकी इतिहास की सबसे बड़ी आर्थिक गिरावटों में से एक था। 1857 के आर्थिक संकट के परिणामस्वरूप कई वर्षों तक चलने वाली गंभीर आर्थिक मंदी आई। व्यवसाय और बैंक बंद हो गए, बेरोजगारी बढ़ी और शेयर बाजार गिर गया।

बुकानन के राष्ट्रपति कार्यकाल के दौरान, दक्षिणी राज्यों ने संघ से अलग होने की प्रक्रिया शुरू कर दी, और 1860 में रिपब्लिकन अब्राहम लिंकन के चुनाव के जवाब में वे अलग हो गए। बुकानन ने अलगाव संकट के प्रति निष्क्रिय रुख अपनाया, यह तर्क देते हुए कि संघीय सरकार के पास बलपूर्वक अलगाव को रोकने का अधिकार नहीं था। निर्णायक कार्रवाई की इस कमी ने अलगाववादी आंदोलन को गति पकड़ने दी। उनके मजबूत नेतृत्व के अभाव और अलगाव संकट से निपटने के लिए निर्णायक कदम उठाने में उनकी अनिच्छा ने दक्षिण में यह धारणा मजबूत की कि वह सैन्य विरोध का सामना किए बिना ही संघ को छोड़ सकता है।

1860 में, अब्राहम लिंकन, जो पहले रिपब्लिकन राष्ट्रपति बने, चुने गए। 1 जनवरी, 1863 को, राष्ट्रपति लिंकन ने अंतिम दासता मुक्ति उद्घोषणा पर हस्ताक्षर किए और उसे जारी किया, जिसमें यह घोषित किया गया कि परिसंघ के नियंत्रण वाले क्षेत्रों में सभी गुलाम बनाए गए लोगों को स्वतंत्र किया जाएगा। इस कार्यकारी आदेश का गृहयुद्ध पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा, क्योंकि इसने संघर्ष को केवल संघ को बनाए रखने की लड़ाई ही नहीं, बल्कि दासता को समाप्त करने की लड़ाई में भी बदल दिया। दासता मुक्ति उद्घोषणा ने सभी गुलाम व्यक्तियों को तुरंत मुक्त नहीं किया। यह विशेष रूप से परिसंघ-नियंत्रित क्षेत्रों पर लागू होती थी, जहाँ संघ का अधिकार सीमित था। जैसे-जैसे संघ की सेनाएँ आगे बढ़ीं और परिसंघ के क्षेत्रों पर नियंत्रण हासिल करती गईं, यह उद्घोषणा लागू की गई और उन क्षेत्रों के गुलाम बनाए गए लोगों को स्वतंत्र किया गया। दासता मुक्ति उद्घोषणा संयुक्त राज्य अमेरिका में अंततः दासता के उन्मूलन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम थी और इसने अमेरिकी संविधान के तेरहवें संशोधन के पारित होने का मार्ग प्रशस्त किया, जो 6 दिसंबर, 1865 को पारित और अनुमोदित किया गया।

1850 के दशक से आगे रिपब्लिकन सींग दासता के मुद्दे को लेकर संकट में था। देश में दो प्रमुख विभाजन थे, जिनका प्रतिनिधित्व राजनीतिक विचार की दो प्रमुख श्रेणियों ने किया। 1856 में अलगाव की एक प्रक्रिया शुरू हुई, जब दासता-विरोधी और दासता-समर्थक समूह दासता पर अपने विचारों को कायम रखने के प्रयास में कैनसस क्षेत्र में आ बसे; उसी समय फिलाडेल्फिया को लाओदीकिया से अलग किया जा रहा था। डेमोक्रेट दासता-समर्थक थे और रिपब्लिकन दासता-विरोधी थे।

1856 में, ब्लीडिंग कैनसस आसन्न युद्ध का एक लघु प्रतिरूप था। उसी वर्ष एक गुलामी-समर्थक डेमोक्रेट को रिपब्लिकन हॉर्न का प्रमुख चुना गया, और उसका अप्रभावी नेतृत्व एक अप्रभावी राष्ट्रपति पद का प्रतीक बन गया, जो इन हाल के अंतिम दिनों तक रहा। वह उस पहले रिपब्लिकन राष्ट्रपति का पूर्ववर्ती था, जिसे बुकानन के राष्ट्रपति पद द्वारा छोड़ी गई गड़बड़ी को साफ करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

1863 तक, प्रकाशितवाक्य के तेरहवें अध्याय के पृथ्वी के पशु के इतिहास में रिपब्लिकन सींग ने सबसे महत्वपूर्ण कार्यकारी आदेश जारी किया। यह कार्यकारी आदेश गुलामी के प्रश्न को संबोधित करता था। घोषणा के एक अनुच्छेद में कहा गया है, "कि ईस्वी सन् एक हजार आठ सौ तिरेसठ के जनवरी माह के प्रथम दिन, किसी भी राज्य या राज्य के निर्दिष्ट भाग के भीतर दास बनाकर रखे गए सभी व्यक्ति, जिसके लोग उस समय संयुक्त राज्य अमेरिका के विरुद्ध विद्रोह में होंगे, तब, उस समय से आगे और सदा के लिए स्वतंत्र होंगे; और संयुक्त राज्य की कार्यकारी सरकार, जिसमें उसके सैन्य और नौसैनिक प्राधिकरण शामिल हैं, ऐसे व्यक्तियों की स्वतंत्रता को मान्यता देगी और उसे बनाए रखेगी, और ऐसे व्यक्तियों या उनमें से किसी को भी अपनी वास्तविक स्वतंत्रता के लिए वे जो भी प्रयास करें, उनमें दमन करने हेतु कोई कार्य नहीं करेगी।" यद्यपि उस समय गुलामी की समस्या का समाधान ऐतिहासिक रूप से अधूरा था, फिर भी संविधान का सार तब परिलक्षित होता है जब लिंकन ने लिखा, "किसी भी राज्य के भीतर दास बनाकर रखे गए सभी व्यक्ति ... तब, उस समय से आगे और सदा के लिए स्वतंत्र होंगे।"

लिंकन उस मौलिक सिद्धांत की ओर लौट रहे थे जो संविधान में व्यक्त किया गया है, जो यह घोषित करता है कि 'सभी मनुष्यों को समान रूप से सृजित किया गया है'। उसी समय जब प्रोटेस्टेंट सींग अपनी आधारभूत भविष्यवाणी—जो दासता की भविष्यवाणी है—को अस्वीकार कर रहा था, लिंकन आधारभूत सत्तों की ओर लौट रहे थे। अतः, ठीक उसी समय जब रिपब्लिकन सींग दासता के संबंध में इतिहास का अपना सबसे महत्वपूर्ण 'कार्यकारी आदेश' जारी कर रहा था, प्रोटेस्टेंट सींग ने भी दासता की भविष्यवाणी के संबंध में—जिसका प्रतिनिधित्व मूसा की शपथ और शाप करते हैं—अपने भविष्यवाणी-संबंधी इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण कार्यकारी आदेश जारी किया। रिपब्लिकन सींग ने नींवों की ओर लौटने का चयन किया; प्रोटेस्टेंट सींग ने अपनी नींव को अस्वीकार कर, उनकी ओर लौटने का चयन किया जिनकी ओर कभी न लौटने की उसे आज्ञा दी गई थी।

1863 में, रिपब्लिकन सींग दो खेमों में बँट गया था, जैसे यरोबाम और रहोबाम के समय प्राचीन इस्राएल का राज्य विभाजित हुआ था। 1863 में, प्रोटेस्टेंट सींग कानूनी रूप से रिपब्लिकन सींग से जुड़ गया, जिसका प्रतीक यरोबाम की बेतएल और दान में दो वेदियाँ हैं। ये दोनों सींग इतिहास में एक-दूसरे के समानांतर चलते हैं, और 1863 का इतिहास विशेष रूप से अंतिम दिनों के इतिहास का प्रतिनिधित्व करता है।

मिलराइट इतिहास, कुछ भविष्यसूचक अपवादों के साथ, एक लाख चवालीस हजार के इतिहास में दोहराया जाता है। उन अपवादों में से एक यह है कि मिलराइट इतिहास में लक्षित समूह पहले आंदोलन के बाहर के लोग थे, और उसके बाद स्वयं आंदोलन था। एक लाख चवालीस हजार के आंदोलन में, प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह की दो आवाज़ें दो लक्षित समूहों की पहचान करती हैं, किंतु वे लक्ष्य मिलराइट इतिहास के उलट हैं। पहला लक्ष्य परमेश्वर की प्रजा है, और दूसरी आवाज़ परमेश्वर के अन्य झुंड को संबोधित करती है, जो अभी भी बाबुल में हैं।

भविष्यवाणी-संबंधी एक और ध्यान देने योग्य बात यह है कि, भले ही दोनों इतिहास एक कलीसिया से दूसरी कलीसिया तक बढ़ते हैं, मिलराइट्स फिलाडेल्फिया से लाओदीकिया चले गए, और तीसरे स्वर्गदूत का शक्तिशाली आंदोलन लाओदीकिया से फिलाडेल्फिया की ओर बढ़ता है। यह दर्शाता है कि मिलराइट्स छठी कलीसिया से सातवीं कलीसिया तक गए, और एक लाख चवालीस हजार सातवीं कलीसिया से आठवीं कलीसिया तक जाते हैं, जो सातों में से ही है।

रिपब्लिकन सींग ने 1863 के आसपास के ऐतिहासिक संदर्भ में, एक गुलामी-समर्थक राष्ट्र से एक गुलामी-विरोधी राष्ट्र की ओर अपना संक्रमण शुरू किया। उस इतिहास के संकट ने दो राजनीतिक दलों को स्थापित किया जो आज इन "अंतिम दिनों" में भी वही परस्पर विरोधी हैं। जैसे उस इतिहास के पहले रिपब्लिकन राष्ट्रपति की हत्या गृहयुद्ध खत्म होने के कुछ ही दिनों बाद कर दी गई थी, वैसे ही आखिरी रिपब्लिकन राष्ट्रपति की प्रतीकात्मक हत्या कर दी गई और दुनिया के उल्लास के बीच उसे सड़क पर मृत समान छोड़ दिया गया। उसकी हत्या गृहयुद्ध समाप्त होने के कुछ दिन बाद नहीं, बल्कि अंतिम गृहयुद्ध शुरू होने से ठीक पहले हुई।

अमेरिकी इतिहास का सबसे अप्रभावी राष्ट्रपति, पहले रिपब्लिकन राष्ट्रपति से पहले था, और अंतिम रिपब्लिकन राष्ट्रपति से पहले भी उतना ही अप्रभावी राष्ट्रपति होगा। पहले रिपब्लिकन राष्ट्रपति से पहले रहे डेमोक्रेटिक राष्ट्रपति की अप्रभाविता ने उस संकट को जन्म दिया जो आगे चलकर गृहयुद्ध में बदल गया, और वही अप्रभाविता अब भी देखने को मिल रही है। अंतिम रिपब्लिकन राष्ट्रपति से पहले आने वाला डेमोक्रेटिक राष्ट्रपति अर्थव्यवस्था का प्रबंधन इस तरह करता है कि उसके परिणामस्वरूप उस समय तक अमेरिकी इतिहास का सबसे बड़ा आर्थिक पतन होता है। दोनों सींग रविवार के कानून तक समानांतर चलते हैं। 1863 में दोनों सींगों की पहली पीढ़ी की शुरुआत हुई, और दोनों के लिए चौथी और अंतिम पीढ़ी पूर्व की ओर मुख किए, सूर्य के आगे झुकेगी।

एलिय्याह का संदेश सदैव परमेश्वर के न्यायों के साथ आता है, जो चेतावनी के संदेश की पुष्टि करते हैं। दुनिया का समाज अब उसी प्रकार जी रहा है, जैसे जलप्रलय से पहले के लोग जीते थे। वे खाते-पीते हैं और यह उम्मीद करते हैं कि वैश्वीकरणवादी तकनीकी दिग्गज जो भी समस्या उत्पन्न हो, उसे सुलझा देंगे। परमेश्वर का वचन बताता है कि संसार अब एक भीषण संकट के कगार पर है।

"'रात की क्या खबर?' क्या मैं इन संदेशों का महत्त्व समझता हूँ? क्या मैं समझता हूँ कि महान उपचारात्मक व्यवस्था के अंतिम कार्य में उनका क्या स्थान है? क्या मैं 'भविष्यवाणी के सुनिश्चित वचन' से इतना परिचित हूँ कि अपने चारों ओर घटित हो रही घटनाओं में यह ठोस प्रमाण देख सकूँ कि आनेवाला राजा द्वार पर ही है? क्या मुझे उस उत्तरदायित्व का भान है जो परमेश्वर ने दिया है, उस प्रकाश के मद्देनज़र जो उसने दिया है? क्या मैं उसके भण्डारी के रूप में मुझ पर सौंपे गए हर प्रतिभा का उपयोग नाश की ओर जा रहे लोगों को बचाने के लिए सुनियोजित प्रयासों में कर रहा हूँ? या मैं गुनगुना और उदासीन हूँ, दुष्ट संसार के साथ कुछ हद तक मिला-जुला, और परमेश्वर ने जो साधन और क्षमता मुझे दी है, उसे प्रायः आत्मतुष्टि में खर्च करता हुआ, उसके कार्य की उन्नति से अधिक अपनी सुविधा और आराम की परवाह करता हूँ? क्या मैं अपने आचरण से उस विश्वास को बल दे रहा हूँ जो संसार में बढ़ता जा रहा है कि 'सेवंथ-डे एडवेंटिस्ट लोग तुरही को अस्पष्ट स्वर दे रहे हैं, और संसारियों के मार्ग पर चल रहे हैं?'"

हम एक समीप आते परमेश्वर के पदचाप सुन रहे हैं, जो संसार को उसकी अधर्मता के लिए दंड देने आ रहा है। समय का अंत हमारे निकट आ पहुँचा है। संसार के निवासियों को जला देने के लिए गठुओं में बाँधा जा रहा है। क्या तुम जंगली घास के साथ बाँधे जाओगे? क्या तुम समझते हो कि हर वर्ष हजारों-हजार और दस गुना दस हज़ार आत्माएँ नष्ट हो रही हैं, अपने पापों में मर रही हैं? परमेश्वर की विपत्तियाँ और न्याय पहले ही अपना काम कर रहे हैं, और आत्माएँ विनाश की ओर जा रही हैं क्योंकि उनके मार्ग पर सत्य का प्रकाश नहीं चमका है। जनरल कॉन्फ्रेंस डेली बुलेटिन, 1 अप्रैल, 1897.

रात में मैंने अपने प्राण से तुझे चाहा है; हाँ, मेरे भीतर की आत्मा से मैं भोर ही से तुझे खोजूँगा; क्योंकि जब तेरे न्याय पृथ्वी पर होते हैं, तब जगत के निवासी धर्म सीखते हैं। यशायाह 26:9.